DR. SUMAN LALRAY
Assistant professor
Deptt. Of sanskrit,
S.R.A.P. college, Bara chakia

B.A. (Hons.), part – II
subject – SANSKRIT
paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (द्वितीयोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० – 1

कामं प्रिया न सुलभा मनस्तु तदभावदर्शनाश्वासि ।
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते ॥

अन्वय:

कामं प्रिया न सुलभा कामम्, मनस्तु तद्भावदर्शनाश्वासि मनसिजे अकृतार्थेऽपि उभयप्रार्थना रतिं कुरुते ।

अनुवाद

यद्यपि मेरी प्रिया शकुन्तला का मिलना अभी दुर्लभ है, तो भी मेरे प्रति उसके भावों, मन्दगमन आदि चेष्टा को देखकर मेरे मन में कुछ चीज तो बँधी हुई है। क्योंकि कामवासना यद्यपि कृतार्थ न हो फिर भी दोनों की चाह ही सुखप्रद होती है।

Scanned by TapScanner